लखनऊ
सोमवार, 28 मार्च 2022
वर्षः-6 अंकः-34
पृष्ठः-8 मूल्यः- 2 रुपये
RNI- UPHIN/2016/74800

हिन्दी साप्ताहिक

करण वाणी

नई सोच, नया जुनून.....

मैं आदित्यनाथ योगी ईश्वर की शपथ लेता हूं....

आदित्यनाथ योगी की शपथ

मैं आदित्यनाथ योगी... ईश्वर की शपथ लेता हूं कि मैं विधि द्वारा स्थापित भारत के संविधान के प्रति सच्ची श्रद्धा और निष्ठा रखूंगा, मैं भारत की प्रभुता और अखंडता को अक्षुण्ण रखूंगा, मैं उत्तर प्रदेश राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में अपने कर्तव्यों का श्रद्धापूर्वक और शुद्ध अंतःकरण से निर्वाहन करूंगा तथा मैं भय या पक्षपात, अनुराग या द्वेष के बिना, सभी प्रकार के लोगों के प्रति संविधान और विधि के अनुसार न्याय करूंगा मैं आदित्यनाथ योगी... ईश्वर की शपथ लेता हूं कि जो विषय उत्तर प्रदेश राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में मेरे विचार के लिए लाया जाएगा अथवा मुझे ज्ञात होगा, उसे किसी व्यक्ति या व्यक्तियों को, तब के सिवाए जबकि ऐसे मुख्यमंत्री के रूप में अपने कर्तव्यों के सम्यक निर्वहन के लिए ऐसा करना अपेक्षित हो, मैं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संसूचित या प्रकट नहीं करूंगा।

इतिहास रचकर लगातार दूसरी बार बने सीएम

लखनऊ (करण वाणी, न्यूज)। योगी आदित्यनाथ ने यूपी के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली, यूपी में 35 साल बाद किसी पार्टी को लगातार दूसरी बार बहुमत मिला है, योगी आदित्यनाथ का शपथ का शपथ ग्रहण समारोह लखनऊ के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी इकाना स्टेडियम में संपन्न हुआ।

शपथ ग्रहण समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित तमाम बड़े नेता मौजूद रहे, सीएम और डिप्टी सीएम सहित योगी कैबिनेट में 53 दिग्गज हैं, उत्तर प्रदेश की सियासत के कई मिथक तोड़ते हुए योगी आदित्यनाथ ने लगातार दूसरी बार उत्तर प्रदेश की कमान संभाल ली है। गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश का राजनीतिक इतिहास बदल दिया है, यूपी में 35 साल बाद किसी पार्टी को लगातार दूसरी बार बहुमत मिला है।

राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने योगी आदित्यनाथ को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई, जबकि केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक ने डिप्टी सीएम पद की शपथ ली, इसके अलावा दो डिप्टी सीएम, 16 कैबिनेट मंत्री, 14 राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और 20 राज्य मंत्री बनाए गए हैं, निवर्तमान डिप्टी सीएम दिनेश शर्मा, श्रीकांत शर्मा, सिद्धार्थनाथ सिंह, मुकुट बिहारी वर्मा को मंत्रिमंडल में जगह नहीं दी गई है।

वहीं इस बार मोहसिन रजा की छुट्टी की गई है, उनकी जगह दानिश आजाद, योगी मंत्रिमंडल का मुस्लिम चेहरा बनाए

गए हैं, बलिया जिले की बांसडीह विधानसभा स्थित अपायल गांव के रहने वाले दानिश आजाद उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी अल्पसंख्यक मोर्चा के प्रदेश महामंत्री हैं, आजाद यूपी सरकार की उर्दू भाषा कमेटी के सदस्य भी रह चुके हैं, लखनऊ यूनिवर्सिटी में पढ़े दानिश आजाद अंसारी छात्र जीवन में ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् से जुड़ गए थे।

मंत्री बनने वाले 52 नाम

उप मुख्यमंत्री
1. केशव प्रसाद मौर्य
2. ब्रजेश पाठक

कैबिनेट मंत्री
3. सूर्य प्रताप शाही
4. सुरेश कुमार खन्ना
5. स्वतंत्र देव सिहं
6. बेबी रानी मौर्य
7. लक्ष्मी नारायण चौधरी
8. जयवीर सिंह
9. धर्मपाल सिंह
10. नंद गोपाल गुप्ता नंदी
11. भूपेंद्र सिंह चौधरी
12. अनिल राजभर
13. जितिन प्रसाद
14. राकेश सचान
15. अरविंद कुमार शर्मा
16. योगेन्द्र उपाध्याय
17. आशीष पटेल
18. संजय निषाद

स्वतंत्र प्रभार
19. नितिन अग्रवाल
20. कपिल देव अग्रवाल
21. रविंद्र जायसवाल
22. संदीप सिंह
23. गुलाब देवी
24. गिरीश चंद्र यादव
25. धर्मवीर प्रजापति
26. असीम अरूण- राज्यमंत्री
27. जेपीएस राठौर
28. दयाशंकर सिंह
29. नरेंद्र कश्यप
30. दिनेश प्रताप सिंह
31. अरूण कुमार सक्सेना
32. दयाशंकर मिश्र दयालु

राज्यमंत्री
33. मयंकेश्वर सिंह
34. दिनेश खटीक
35. संजीव गोंड
36. बलदेव सिंह ओलख
37. अजीत पाल
38. जसवंत सैनी
39. राकेश निषाद
40. मनोहर लाल मन्नू कोरी
41. संजय गंगवार
42. बृजेश सिंह
43. केपी मलिक
44. सुरेश राही
45. सोमेंद्र तोमर
46. अनूप प्रधान वाल्मीकि
47. प्रतिभा शुक्ला
48. राकेश राठौर गुरू
49. रजनी तिवारी
50. सतीश शर्मा
51. दानिश आजाद अंसारी
52. विजय लक्ष्मी गौतम

शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा काम करेंगे: पवन सिंह

▶▶ प्रधान संघ ने दिया भाजपा टछउ प्रत्याशी पवन सिंह चौहान को समर्थन

▶▶ हर साल 25 हजार युवाओं को नौकरी दिलाने का वादा

एस.वी. सिंह उजागर

सीतापुर (करण वाणी,न्यूज)। 25 हजार युवाओं को हर साल रोजगार दिलाने के साथ शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा काम करेंगे। विधान परिषद चुनाव का बिगुल बजते ही भाजपा प्रत्याशी पवन सिंह चौहान अपने क्षेत्र में मतदाताओं से संपर्क साधने में जुट गए हैं। वह क्षेत्र में शिक्षा और रोजगार का विजन लेकर मतदाताओं के पास जा रहे हैं।

श्री चौहान ने जनसंपर्क अभियान के दौरान ही अपनी कोर कमेटी से शिक्षा और रोजगार को लेकर रोडमैप तैयार करते रहने का निर्देश दिया है।

उन्होंने कहा कि 9 अप्रैल को मतदान के तुरंत बाद ही क्षेत्र के लोग उनसे इन मुद्दों को लेकर सम्पर्क करें। पढ़े लिखे युवा यदि बेरोजगार हैं तो हम उन्हें किसी न किसी रूप में रोजगार के साथ अवश्य जोड़ेंगे।

क्षेत्र में मिल रहे अपर जनसमर्थन के बावजूद भाजपा प्रत्याशी पवन सिंह चौहान प्रचार-प्रसार में जमकर पसीना बहा रहे हैं। जाहिर है कि वो किसी भी तरह से कोई कसर छोड़ना नहीं चाहते हैं। उनके प्रचार अभियान से जुड़े कार्यकताओं और समर्थकों का मत है कि इस बार यहां से रिकार्ड मतों से विजय हासिल करके प्रदेश भर में इतिहास बनाना है।

ज्ञात हो कि प्रत्याशियों के भाग्य पर मतदाता 9 अप्रैल को मुहर लगाएंगें और अपना प्रतिनिधि चुनेंगे। प्रत्याशियों को यह भलीभांति मालूम है कि एक-एक वोट कीमती है और छोटा सा आंकड़ा भी उनका गणित बिगाड़ सकता है।

भाजपा प्रत्याशी एक-एक वोट पाने के लिए क्षेत्र में हर मतदाता तक अपनी पहुंच बनाने में जुटे हुए हैं, जिसके लिए वो हर संभावित मतदाता के पास पहुंच रहे हैं।

नामांकन के बाद से अब मुकाबले की तस्वीर भी लगभग साफ हो गई है। लिहाजा भाजपा प्रत्याशी और उनके समर्थकों ने प्रचार में पूरी ताकत झोंक दी है। विधान परिषद चुनाव में ग्राम प्रधान, ग्राम पंचायत सदस्य, क्षेत्र पंचायत सदस्य, ब्लॉक प्रमुख, जिला पंचायत सदस्य, जिला पंचायत अध्यक्ष, नगर पालिकाओं के सदस्य और नगर पालिकाओं के चेयरमैन, विधानसभा में चुने गये विधायक वोट करते हैं।

इन सभी संभावित प्रत्याशियों से संपर्क के लिए भाजपा प्रत्याशी पवन सिंह चौहान का काफिला रोज जनसंपर्क के लिए निकलता है। जिसके लिए वो जमीनी स्तर से लेकर सोशल मीडिया पर भी धुआंधार प्रचार कर रहे हैं। आज इनका जनसंपर्क अभियान सिधौली, भिटौरा, कसमंडा, पतारा, मछरेहटा, खैराबाद, ऐलिया, हरगांव, पारसेंडी, पहला, महमूदाबाद और बिसवां आदि क्षेत्रों में चला। जहां पहले से उनके आने की बांट जोह रहे ग्राम प्रधान, ग्राम पंचायत सदस्य और ब्लॉक प्रमुख व चेयरमैन ने उन्हें भरपूर सहयोग और समर्थन देने की बात कही।

सपा की बैठक में शिवपाल यादव को नहीं मिला न्योता

लखनऊ (करण वाणी, न्यूज)। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में अखिलेश यादव ने अपने चाचा शिवपाल यादव को सपा के चुनाव चिन्ह से मैदान में उतारा। इससे यह संदेश देने की कोशिश की गई कि अखिलेश यादव और शिवपाल यादव के बीच अब सब कुछ ठीक हो गया है लेकिन सपा के विधायक दल की बैठक में चाचा शिवपाल यादव को आमंत्रित नहीं किया गया। अब शिवपाल यादव ने अपनी प्रतिक्रिया दी है।

सपा की बैठक में नहीं बुलाने पर क्या बोले शिवपाल यादव?: शिवपाल यादव से जब पूछा गया कि आप सपा की विधायक दल की बैठक में नहीं गए, ऐसा क्यों? इस पर उन्होंने कहा कि हम समाजवादी पार्टी से विधायक हैं। सक्रीय सदस्यता लेकर ही मैंने चुनाव लड़ा है। मैंने दो दिन पहले सुना था कि विधानमंडल की बैठक है तो मैं लखनऊ में हो रुका था। मुझे पता चला कि सभी विधायकों को सूचना दी गई है मुझे नहीं दी गई।

अब मैं इटावा जा रहा हूं: शिवपाल यादव ने कहा कि अब मुझे इटावा जाना है अब इटावा जा रहे हैं। मुझे बैठक में नहीं बुलाया गया तो मैं नहीं गया। चुनाव हारने पर शिवपाल यादव ने कहा कि कुछ भूल हुई है। हमें जनता ने नहीं हराया है। इसकी चर्चा केंद्रीय नेतृत्व करे। समीक्षा करें। हम इस पर कोई बात नहीं करना चाहते।

दो दिन से बैठे थे कि बैठक में जाएंगे: अखिलेश यादव के चाचा शिवपाल यादव ने यूपी तक से बातचीत करते हुए कहा कि मुझे लगता है वह मुझे भी अभी गठबंधन का हिस्सा मानते हैं, सपा का सदस्य नहीं। अब हम इटावा जा रहे हैं, गठबंधन के लोगों को बुलायेंगे और बैठक करेंगे। दो दिन से हम लखनऊ में बैठकर इंतजार कर रहे थे कि बैठक होने वाली है लेकिन नहीं बुलाया गया तो हम जा रहे हैं।

बता दें कि समाजवादी पार्टी में विवाद के बाद शिवपाल यादव ने सपा छोड़कर अपनी एक अलग पार्टी प्रगतिशील समाजवादी पार्टी (लोहिया) बना ली थी। इसके बाद 2022 विधानसभा चुनाव के वक्त अखिलेश यादव और शिवपाल ने साथ मिलाकर चुनाव लड़ने का फैसला किया था। हालांकि गठबंधन चुनाव हार गया। शिवपाल यादव ने कहा था कि सपा के नेताओं ने हमारे गठबंधन के लोगों से कोई मदद नहीं ली।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षकों की सबसे बड़ी भूमिकाः प्रो. वीरेंद्र सिंह नेगी

प्रो. वीरेंद्र सिंह नेगी
दिल्ली विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद के निर्वाचित सदस्य

दिल्ली विश्वविद्यालय में नयी शिक्षा नीति आने के बाद से ही पक्ष और विपक्ष के लोग सामने आ गए हैं, इसका छात्रों पर क्या असर होगा विषय पर दिल्ली विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद के निर्वाचित सदस्य प्रो. वीरेंद्र सिंह नेगी से डॉ सीमा ने बात की, बातचीत के कुछ अंश आपके सामने हैं ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रारूप को तय करने में हमारी प्रत्यक्ष भूमिका रही है, इसलिए दिल्ली विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने के फैसले को भी मेरा हमेशा समर्थन रहा है। नीति का प्रारूप तय करना और उसे सफलतापूर्वक विश्वविद्यालय में लागू करना दो अलग-अलग विषय है और अब आगे इसके सफल क्रियान्वयन की चुनौती हम सभी के समक्ष होगी। इसके संबंध में जो भी बाधाएं होंगी उनको दूर करने में मैं हर संभव भूमिका होगी

35 वर्ष के अंतराल के बाद भारत एक नई शिक्षा नीति को अपनाने जा रहा है जिसे कि बेहद व्यापक विचार विमर्श, परामर्श और विवेचना के बाद तैयार किया गया है। समसामयिक जगत के व्यक्ति, संस्थान, समाज, देश और वैश्विक दृष्टिकोण को एक साथ भारत के छात्रों की आवश्यकता व संभावना की पूर्ति करने वाली इस नीति में व्यक्ति निर्माण, शिक्षा के मूल्य, भाषा, रोजगार, कौशल, कला व क्षमता, पठन पाठन, चिंतन मनन,लेखन, शोध आदि सभी पक्षों के संवर्धन की कल्पना को साकार करने का रोड मैप में प्रस्तुत किया गया है। इतना सब कुछ विद्यमान होते हुए इस शिक्षा नीति से बनकर तैयार छात्र कुंठा व आक्रोश मुक्त जिम्मेदार नागरिक बनकर मानवता के निर्माण व विकास के साथ-साथ विश्व कल्याण भागीदार बनेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अगले 20 वर्षों में भारत के ऐसे नागरिकों का सृजन करने के लिए लक्षित है जो पूरे विश्व को सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय, शैक्षिक व आध्यात्मिक दक्षता के साथ-साथ वैज्ञानिक व अनुसंधान जगत में भी उत्कृष्ट नेतृत्व की क्षमता प्रदान करें। इस शिक्षा नीति में शिक्षा के विभिन्न पहलुओं का समावेश और छात्र विशेष की मुख्य रुचि, आवश्यकता, परिवेश व कौशल के आधार पर उसके उन्नयन और दक्षता को संवारने का अवसर देने पर बल दिया गया है।

शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सबसे बड़ी भूमिका इसके क्रियान्वयन के लिए अपना सकारात्मक योगदान देने रहेगा। बदलते समय की आवश्यकता के अनुरूप अपनी विशेषता का उन्नयन तथा नई विधाओं व टेक्नोलॉजी से स्वयं को सुसज्जित कर नए भारत के छात्र छात्राओं की आने वाली पीढ़ियों को अच्छी शिक्षा प्रदान करना शिक्षकों का कर्तव्य रहेगा। इस दिशा में शिक्षकों के लिए शोध, शिक्षण, प्रशिक्षण के नवीनतम आयामों की व्यवस्था करनी होगी।

भारत एक लोकतांत्रिक समाज है। ? लोकतंत्र किसी भी विषय पर विरोध की स्वतंत्रता भी प्रस्तुत करता है। आलोचनात्मक योगदान किसी भी कार्य में सुधार की संभावना को बढ़ाता है। विश्वविद्यालय देश का अग्रणी विश्वविद्यालय है जिसमें 10,000 से अधिक शिक्षक कार्यरत हैं और 500000 से अधिक विद्यार्थी यहां पढ़ते हैं। एक नीतिगत बदलाव में आलोचना और विरोध का होना स्वाभाविक है।

कुछ पक्षों ने दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षा नीति के विरोध से अधिक यूजीसी फ्रेमवर्क वह लागू करने का विरोध किया है। उनकी कुछ जायज आशंकाएं हो सकती हैं जिनसे उन्होंने अपने विमर्श और परामर्श द्वारा विश्वविद्यालय प्रशासन को अवगत कराया है। विश्वविद्यालय को अवश्य देखना चाहिए कि ये आशंकाएं इस शिक्षा नीति के क्रियान्वयन से दूर की जा सकें।

दिल्ली विश्वविद्यालय का बृहद स्वरूप अपने आप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने के लिए एक चुनौती है। इतना विराट स्वरूप और देश भर के तथा विदेशों के भी छात्रों के केंद्र वाला यह विश्वविद्यालय इतनी ही बड़ी समस्याओं का भी केंद्र है। इसके लिए कुशल अनुभवी और समन्वयी प्रशासनिक नेतृत्व की आवश्यकता होगी। इंफ्रास्ट्रक्चर, परमानेंट रेगुलर फैकेल्टी, अतिरिक्त वित्तीय ग्रांट, सर्व सहयोग, उचित योजना और क्लियर विजन की अनुपस्थिति जैसी समस्याएं विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सफल क्रियान्वयन के लिए बाधक बना

दिल्ली विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन कि दिशा में प्रथम दो पग बढ़ा चुका है। एकेडमिक काउंसिल और एग्जीक्यूटिव काउंसिल में विस्तार से चर्चा के बाद इस दिशा में यूजीसी फ्रेमवर्क के साथ उचित समय रहते फैसला कर लेना सफलता की ओर बढ़ाया हुआ कदम है। आने वाला समय पाठ्यक्रम निर्माण, विषय विस्तार और कंटेंट समावेश की क्लैरिटी के साथ पूर्ण रूप से इस वर्ष पहले बैच को प्रवेश देकर आगे बढ़ने की तैयारी का रहेगा। जिसके लिए विश्वविद्यालय संभावित कदम उठा रहा है।

प्रशासन राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू करने के साथ साथ विश्वविद्यालय में व्याप्त समस्याओं को समझते हुए और उनका निराकरण करते हुए सफलता से इस नीति को क्रियान्वित करेगा ऐसी पूर्ण आशा और विश्वास है।

भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को जुलाई 2020 में लागू कर दिया था। आज 2022 में लगभग 2 वर्ष के बाद व्यापक विचार विमर्श और कार्यकारी प्रावधान के साथ दिल्ली विश्वविद्यालय ने यूजीसी की गाइडलाइंस को अपनाते हुए सत्र 2022-23 से इसे लागू करने का निर्णय किया है। इसमें कोई जल्दी बाजी नहीं हुई है। यूजीसी के प्रस्तुत फ्रेमवर्क को दिल्ली विश्वविद्यालय की एकेडमिक परिस्थितियों और जरूरतों के साथ सामंजस्य बिठाते हुए तैयार किया गया है। छात्र शिक्षक पाठ्यक्रम और शिक्षा के विस्तार को ध्यान में रखते हुए उत्तरोत्तर इसमें और अधिक सुधारों की मांग की जा सकती है। अभी तो केवल फ्रेमवर्क को मंजूरी दी गई है ताकि आने वाले समय में इसे सही प्रकार से विद्यार्थियों के लिए तैयार किया जा सके।

जनता में दौड़ा योगी के स्वच्छ शासन का अंडर करंट

⏩ थाना, ब्लाक व तहसील में नहीं चला दबंग कार्यकर्ताओं का सिक्का

अरविंद सिंह चौहान

लखनऊ (करण वाणी, न्यूज)। उत्तर प्रदेश में संपन्न हुए विधानसभा चुनाव में जिस तरीके से योगी सरकार को प्रचंड बहुमत मिला है। इसमें योगी के स्वच्छ शासन का अंडर करंट जनता के अंदर दौड़ा जिसकी वजह से आदित्यनाथ योगी ने सारे रिकार्डों को तोड़ते हुए अपने नाम किया है। ऐसा नहीं है कि योगी को मिले अपार बहुमत की प्रशंसा भारतीय जनता पार्टी के लोग ही कर रहे हैं।

यहां तक विपक्षी दलों के लोग भी मानते हैं कि यह सीधे मुख्यमंत्री योगी और जनता के बीच जिस तरीके से आम आवाम को सुरक्षा व्यवस्था मुहैया कराई और कोरोना वैश्विक महामारी के दौरान गरीबों को राशन तेल चना नमक इत्यादि सुविधाएं दी गई इसका परिणाम है जनता ने भारतीय जनता पार्टी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को झोली भरकर मतदान के द्वारा बहुमत दिया है। इस बहुमत मिलने के साथ ही बहुत साफ हो जाता है जिसकी जरूरत अन्य दलों को भी है तभी आगे बेड़ा पार हो सकता है। जैसे कि जिस तरीके से उत्तर प्रदेश की जनता योगी आदित्यनाथ के ऊपर भरोसा जताती है।ठीक उसी तरीके से देश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ऊपर जनता को पूर्ण विश्वास है। इसलिए दोनों नेताओं के द्वारा जो भी टिप्पणी की जाती है उस पर आम जनता पूरी तरीके से विश्वास करती है।जिसको केवल बातों में ही नहीं बल्कि मतदान में भी तब्दील होते हुए देखा गया।

केंद्र में 2014 2019 में दो बार जिस तरीके से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ऊपर जनता नहीं भरोसा जताते हुए प्रचंड बहुमत की सरकार बनाई है। ठीक उसी प्रकार से उत्तर प्रदेश में 2022 के विधानसभा चुनाव में जनता ने बल्कि दल के ऊपर नहीं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के ऊपर अपार विश्वास जताते हुए सरकार बनाई इसको कोई भी झुठला नहीं सकता है , यह हर एक की जुबान पर बयां हो रहा है। इसका कड़वा सच तब उजागर होता है जब सपा बसपा कांग्रेस जैसे दलों के लोग यह कहते हैं कि यह किसी दल और कार्यकर्ता की बदौलत योगी आदिनाथ को जीत नहीं है।बल्कि जनता में जिस तरीके से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भरोसा कायम किया है यह उसी की जीत है।

जनता के अंदर योगी ने अंडर करेंट पैदा किया है उसकी का परिणाम है कि लोगों को अचंभित करने वाली जीत मिली है।इसका सीधा सा उदाहरण है इससे पहले कि सरकारों में चाहे वह सपा भाजपा बसपा कांग्रेस जो

भी सरकारी रही उनके कार्यकर्ताओं द्वारा थाना , तहसील , ब्लाक आदि प्रशासनिक स्थानों पर कब्जा करके अपनी हुकूमत चलाते थे और गरीबों का जमकर शोषण किया जाता था। जिसकी वजह से परेशान आम जनता आने वाले विधानसभा के चुनाव में कभी किसी दल के ऊपर भरोसा जताते हुए अपने ऊपर हो रहे अत्याचार की न्याय पाने की आस में उसको वोट देकर जीता देती थी तो कभी इसको।लेकिन फिर भी किसी भी सरकार से गरीबों को न्याय मिल पाने की आस कोसों दूर रहती थी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के 5 साल के शासनकाल में जिस तरीके से गरीबों को न्याय मिला है दबंगों द्वारा दोहन नहीं किया जा सका उसका फर्क सीधे तरीके से साफ तौर पर इस चुनाव में दिखाई दिया है।

हर एक गरीब मतदाता के जुबान पर यही बात निकल रही थी इस शासनकाल में किसी प्रकार का कोई दोहन उत्पीड़न दबंगों द्वारा नहीं किया जा सका है।शासन प्रशासन में भी गरीबों की सुनवाई हुई है ऐसा पहले कभी नहीं हुआ।होता क्या था कि पार्टी के कार्यकर्ताओं के दबाव में प्रशासनिक अधिकारी कर्मचारी काम करते थे। जिससे लोगों को न्याय मिलना तो दूर की बात थी बल्कि गरीबों का अनाप-शनाप उत्पीड़न किया जाता था। जिसकी वजह से लोग लगातार सरकारों को बदलते चले आ रहे थे।ऐसा पहली बार देखा गया है कि किसी मुख्यमंत्री के ऊपर जनता ने अपार भरोसा जताते हुए उसके नाम पर ही मतदान करना अपना सुरक्षा कवच और न्याय मिलने की पूरी उम्मीद कायम रखीं। ज्ञात हो कि पूर्व की सरकारों में थाना ब्लाक तहसील स्तर पर पार्टी के कार्यकर्ताओं का सिक्का चलता था।

लेकिन यह पहली सरकार है जिसमें इन स्थानों पर किसी की मनमानी नहीं चली जो सही हुआ अधिकांश वही काम हुए है।यहां तक मन माने ना चलने से काफी पार्टी कार्यकर्ता नाराज भी दिखे।लेकिन जिस तरीके से पहले थाना ब्लाक तहसील में पार्टी कार्यकर्ताओं की जमात भारी तादाद में इकट्ठा रहती थी उसका नजारा भी बहुत ही कम पहले योगी आदित्यनाथ के शासन काल में दिखाई दिया।

आरआरआर के हिंदी संस्करण की कमाई में दूसरे दिन उछाल, तेलुगू की कमाई में भारी गिरावट

फिल्म निर्देशक एस एस राजामौली की फिल्म आरआरआर की बॉक्स ऑफिस पर गर्जना रिलीज के दूसरे दिन ही कमजोर पड़ती दिख रही है। फिल्म के तेलुगू संस्करण को रिलीज के पहले दिन दर्शकों के मिले प्रतिसाद की अपेक्षा फिल्म को रिलीज के दूसरे दिन उम्मीद के मुताबिक प्यार मिलता नहीं दिख रहा है। फिल्म आरआरआर के दूसरे दिन के बॉक्स ऑफिस कलेक्शन के जो शुरूआती आंकड़े शनिवार देर रात तक मिले हैं, उनके मुताबिक फिल्म ने हिंदी भाषी राज्यों में तो अपना कलेक्शन सुधारा है लेकिन दूसरे भाषाई संस्करणों में फिल्म का कलेक्शन शनिवार को सुस्त रहा।

फिल्म आरआरआर के शनिवार के शुरूआती बॉक्स ऑफिस आंकड़े बताते हैं कि फिल्म रिलीज के दूसरे दिन 100 करोड़ का कारोबार भी भारतीय बॉक्स ऑफिस पर नहीं कर पाई है। फिल्म ने रिलीज के पहले दिन भारत में सभी भाषाओं के संस्करणो की कमाई मिलाकर 130 करोड़ रुपये की कमाई की। पहले दिन के अंतिम आंकड़ों के मुताबिक फिल्म ह्यआरआरआरह्ल ने तेलुगू में 100.13 करोड़ रुपये, हिंदी में 20.07 करोड़ रुपये, तमिल में 6.5 करोड़ रुपये, मलयालम में 3.1 करोड़ रुपये और कन्नड़ में 0.20 करोड़ रुपये कमाए।

इसके मुकाबले निर्देशक एस एस राजामौली की पिछली फिल्म बाहुबली 2 ने रिलीज के पहले दिन 121 करोड़ रुपये का ही नेट कलेक्शन किया था। हालांकि इस फिल्म के हिंदी संस्करण का पहले दिन का कलेक्शन आरआरआर से ज्यादा रहा। फिल्म

ह्यबाहुबली 2 ने रिलीज के पहले दिन हिंदी में 41 करोड़ रुपये, तेलुगू संस्करण में 58 करोड़ रुपये, तमिल में 17 करोड़ रुपये और मलयालम में 5 करोड़ रुपये कमाए थे।

आरआरआर बॉक्स ऑफिस कलेक्सन

फिल्म आरआरआर ने रिलीज के दूसरे दिन यानी शनिवार को शुरूआती आंकड़ों के मुताबिक उतना ही कारोबार किया है जितना राजामौली की पिछली फिल्म बाहुबली 2 ने रिलीज के दूसरे दिन किया था। फिल्म ह्यआरआरआरह्ल का शनिवार का कलेक्शन शुरूआती रुझानों के मुताबिक करीब 90 करोड़ रुपये रहा है। इसमें से हिंदी संस्करण की हिस्सेदारी में शुक्रवार के मुकाबले इजाफा हुआ और ये रकम करीब 26.50 करोड़ रुपये रही। फिल्म के तेलुगू संस्करण ने दूसरे दिन 32 करोड़ रुपये के करीब ही कमाई की। फिल्म की भारतीय बॉक्स ऑफिस पर कुल कमाई करीब 220 करोड़ रुपये हो गई है।

वहीं, रिलीज के दूसरे दिन राजामौली की फिल्म ह्यबाहुबली 2 ने भी करीब 90 करोड़ रुपये की ही कमाई की थी। इस फिल्म ने रिलीज के दूसरे दिन हिंदी में 40.50 करोड़ रुपये, तेलुगू में 32 करोड़ रुपये, तमिल में 13.50 करोड़ रुपये और मलयालम में चार करोड़ रुपये कमाए थे।

आरआरआर' के सामने भी 'द कश्मीर फाइल्स' का जलवा कायम

निर्देशक विवेक अग्निहोत्री की फिल्म 'द कश्मीर फाइल्स' लगातार धूम मचा रही है। कश्मीरी पंडितों की दर्दनाक दास्तान पर आधारित यह फिल्म अब तक 'राधे श्याम' और 'बच्चन पांडे' को धूल चटा चुकी है और अब इसके सामने एसएस राजामौली की बड़े बजट की फिल्म 'आरआरआर' है। दरअसल, द कश्मीर फाइल्स का 15वें दिन का कलेक्शन महज 4.5 करोड़ रुपये था, जिसके बाद माना जा रहा था कि अब यह फिल्म ढलान पर है। हालांकि, फिल्म की 16वें की कमाई में एक बार फिर उछाल आया है। इस रिपोर्ट में जानते हैं कि द कश्मीर फाइल्स ने अब तक कुल कितने करोड़ रुपये की कमाई की। साथ ही, किस दिन कितने रुपये कमाए?

विवेक रंजन अग्निहोत्री के निर्देशन में बनी फिल्म द कश्मीर फाइल्स ने 16वें दिन तक कुल 219 करोड़ रुपये की कमाई कर ली है। शुरूआती रुझानों के मुताबिक, फिल्म ने 16वें दिन यानी अपने तीसरे शनिवार को 8.30 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया। उम्मीद जताई जा रही है कि रविवार को फिल्म का कलेक्शन एक बार फिर दोहरे अंक में पहुंच सकता है। गौर करने वाली बात यह है कि द कश्मीर फाइल्स महज 15 करोड़ रुपये में बनकर तैयार हुई थी। वहीं, फिल्म की प्रिंटिंग और प्रचार आदि पर 10 करोड़ रुपये और खर्च किए गए थे। यानी फिल्म की कुल लागत 25 करोड़ रुपये है।अगर द कश्मीर फाइल्स की कमाई की बात करें तो सिर्फ राइट्स बेचकर ही 135 करोड़

रुपये जुटाए गए। आलम यह है कि फिल्म के शाम और रात के शो में अब भी काफी भीड़ रहती है। फिल्म कारोबार से जुड़े लोगों का मानना है कि द कश्मीर फाइल्स की कमाई का ग्राफ एक बार फिर बढ़ सकता है। हालांकि, अब पूरा मामला फिर की स्क्रीनिंग पर निर्भर करता है। इसमें कोई शक नहीं है कि यह फिल्म ऐतिहासिक ब्लॉकबस्टर साबित हुई है, लेकिन तीसरे सप्ताह में इसकी कमाई पर काफी असर पड़ा है। वहीं, आरआरआर रिलीज होने के बाद फिल्म की स्क्रीनिंग भी कम हुई है।

आरआरआर से पहले राम चरण की फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर मचाया था तहलका

साउथ सुपरस्टार रामचरण 27 मार्च को अपना जन्मदिन सेलिब्रेट कर रहे हैं। हाल ही में 25 मार्च को उनकी बहुप्रतीक्षित फिल्म आरआरआर रिलीज हुई है और आते ही सिनेमाघरों में छा गई है। ऐसे में अभिनेता का यह 37 वां जन्मदिन बेहद खास होने वाला है। एक्टर रामचरण को दक्षिण भारतीय सिनेमा में एक लविंग हीरो के साथ ही एक एक्शन हीरो के रूप में भी जाना जाता है। एक्टर रामचरण की फिल्मों में दर्शकों को एक्शन के साथ ही रोमांस का तड़का भी खूब देखने को मिलता है। इस समय फैंस में अपने चहेते सुपरस्टार की फिल्म 'आरआरआर' का खुमार चढ़ा हुआ है, लेकिन इससे पहले भी कई ऐसी फिल्में हैं जो तमिल भाषा के साथ ही हिंदी में भी धमाल मचा चुकी हैं। अगर आप रामचरण के जबरदस्त एक्शन के फैन हैं, तो आपको टीवी का इंतजार करने की जरुरत नहीं हैं क्योंकि आजकल डिजिटल का जमाना है तो उनकी फिल्मों को आप ओटीटी प्लेटफार्म पर भी देख सकते हैं।

मगधीरा-(2009)

अगर बात रामचरण की फिल्मों की करें तो सबसे पहले नाम मगधीरा फिल्म का लिया जाता है। यह फिल्म दर्शकों को बेहद पसंद आई थी और शानदार हिट साबित हुई थी। फिल्म मगधीरा में

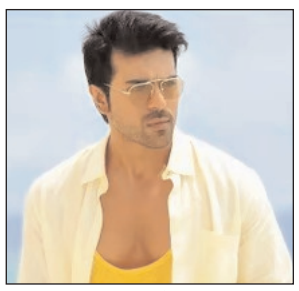

पुनर्जन्म की कहानी है, जिसमें आपको प्यार की कहानी में इमोशन के साथ जबरदस्त एक्शन देखने को मिलेगा। एक्टर रामचरण की इस सुपरहिट फिल्म को आप ओटीटी प्लेटफार्म अमेजन प्राइम वीडियो पर देख सकते हैं।

चिरुथा-(2007)

पुरी जगंनाध द्वारा निर्देशित एक्टर रामचरण की फिल्म चिरुथा भी एक एक्शन थ्रिलर है। इस फिल्म को आप ओटीटी प्लेटफार्म अमेजन प्राइम पर हिंदी में देख सकते हैं। फिल्म चिरुथा में रामचरण ने एक गाइड की भूमिका निभाई है। हालांकि फिल्म की कहानी का मोड़ बहुत ही दिलचस्प है। यह एक ऐसे बच्चे की कहानी है जिसके सामने उसके पिता को मार दिया जाता है। इस फिल्म को आप ओटीटी प्लेटफार्म अमेजन प्राइम पर देख सकते हैं।

बेटिंग राजा-(2012)

अभिनेता रामचरण द्वारा अभिनीत फिल्म बेटिंग राजा एक एक्शन थ्रिलर है। इसे निर्देशक संपत नंदी द्वारा निर्देशित किया गया है। रामचरण की ये फिल्म भी लोगों को खूब पसंद आई थी और उनके करियर की सफल फिल्मों में से एक है। फिल्म 'बेटिंग राजा' को आप ओटीटी प्लेटफार्म वूट एप पर देख सकते हैं।

येवडु-(2014)

अगर बात करें येवडु की तो इस फिल्म में आपको एक्शन का डबल डोज मिलेगा, क्योंकि इस फिल्म में अभिनेता रामचरण के साथ एक्शन हीरो अल्लू अर्जुन भी हैं। फिल्म में आपको भरपूर मनोरंजन मिल सकता है। फिल्म येवडु को आप ओटीटी प्लेटफार्म एमएक्स प्लेयर पर देख सकते हैं, इसके अलावा यह फिल्म यूट्यूब पर भी मौजूद है।

ध्रुवा-(2016)

अभिनेता रामचरण की फिल्म ध्रुवा में उन्होंने आईपीएस ऑफिसर के रूप में मुख्य किरदार निभाया है जो मेडिकल के एक बड़े क्रिमिनल रैकेट को खत्म करना चाहता है। इस क्राइम एक्शन फिल्म में रामचरण के साथ एक्ट्रेस रकुल प्रीत भी हैं। इस फिल्म को आप ओटीटी प्लेटफार्म डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर देख सकते हैं। इसके अलावा यह यूट्यूब पर भी उपलब्ध है।

सहजन की खेती से कमाएं भारी मुनाफा

सहजन को अंग्रेजी में ड्रम स्टिक कहते हैं, सहजन सब्जी बनाने से लेकर दवाओं के निर्माण तक में इस्तेमाल होता है, भारत के ज्यादातर हिस्से में इसकी बागवानी आसानी से की जा सकती है, एक बार पौधा लगा देने से कई सालों तक आप इससे सहजन प्राप्त कर सकते हैं, इसके पत्ते, छाल और जड़ तक का आयुर्वेद में इस्तेमाल होता है, 90 तरह के मल्टी विटामिन्स, 45 तरह के एंटी ऑक्सीजडेंट गुण और 17 प्रकार के एमिनो एसिड होने के कारण सहजन की मांग हमेशा बनी रहती है, सबसे खास बात है कि इसकी खेती में लागत न के बराबर आती है।

लखनऊ (करण वाणी, न्यूज)। सहजन का नाम लेते ही आपके चेहरे के सामने हराभरा पेड़ नजर आ रहा होगा. लेकिन इसकी खेती का चलन तेजी से बढ रहा है. क्योंकि कम लागत में किसानों को अच्छी कमाई दे रहा है, इसकी खेती बंजर पड़ी जमीन पर भी की जा सकती है, इसका वैज्ञानिक नाम मोरिंगा ओलीफेरा है, सहजन की खेती भारत ही नहीं बल्कि दुनिया के कई देशों में खूब होती है. फिलीपिंस श्रीलंका से लेकर कई देशों में खेती की जाती है. डॉ राजेंद्र प्रसाद कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिक डाक्टर एस के सिंह बताते हैं कि सामान्यतया यह एक बहुवर्षीय, कमजोर तना और छोटी-छोटी पत्तियों वाला लगभग दस मीटर से भी उंचा पौधा होता है. सहजन सामान्यतया 25-30 डिग्री सेल्सियस के औसत तापमान पर सहजन के पौधा का हरा-भरा व काफी फैलने वाला विकास होता है यह ठंड को भी सहता है।

लाखों कमाने का मौका

साल में दो बार फल दे वाले सहजन की किस्मों को साल में दो बार फली तोड़ते हैं, फरवरी-मार्च और सितम्बर-अक्टूबर में होती है, प्रत्येक पौधे से लगभग 200-400 (40-50 किलोग्राम) सहजन सालभर मिलता है, सहजन की तुड़ाई बाजार और मात्रा के अनुसार 1-2 माह तक चलता है, सहजन के फल में रेशा आने से पहले ही तुड़ाई करने से बाजार में मांग बनी रहती है और इससे लाभ भी ज्यादा मिलता है, किसान इससे लाखों की कमाई कर सकते हैं।

बारिश और बाढ़ से भी नहीं होता नुकसान

कम या ज्यादा वर्षा से पौधे को कोई नुकसान नहीं होता है यह विभिन्न पारिस्थितिक अवस्थाओं में उगने वाला पौधा है, इसकी खेती सभी प्रकार की मिट्टी में सहजन की खेती की जा सकती है, बेकार, बंजर और कम उर्वरा भूमि में भी इसकी खेती की जा सकती है। व्यवसायिक खेती के लिए साल में दो बार फलनेवाला सहजन के प्रभेदों के लिए 6-7.5 पी.एच. मान वाली बलुई दोमट मिट्टी बेहतर पाया गया है।

जानिए सहजन की अच्छी किस्मों के बारे में

सहजन की वर्ष में दो बार फलने वाले प्रभेदों में पी.के.एम.1, पी.के.एम.2, कोयम्बटूर 2 प्रमुख हैं, इसका पौधा 4-6 मीटर उंचा होता है और 90-100 दिनों में इसमें फूल आता है।

जरूरत के अनुसार विभिन्न अवस्थाओं में फल की तुड़ाई करते रहते हैं. पौधे लगाने के लगभग 160-170 दिनों में फल तैयार हो जाता है।

साल में एक पौधा से 65-70 सें.मी. लम्बा तथा औसतन 6.3 सेंमी. मोटा, 200-400 फल (40-50 किलोग्राम) मिलता है, यह काफी गूदेदार होता है तथा पकने के बाद इसका 70 फीसदी भाग खाने योग्य होता है।

एक बार लगाने के बाद से 4-5 वर्षो तक इससे फलन लिया जा सकता है. प्रत्येक वर्ष फसल लेने के बाद पौधे को जमीन से एक मीटर छोड़कर काटना आवश्यक है।

पौधे लगाने की विधि

सहजन के पौध की रोपनी गड्ढा बनाकर किया जाता है, खेत को अच्छी तरह खरपतवार मुक्त करने के बाद 2.5 ७ 2.5 मीटर की दूरी पर 45 ७ 45 ७ 45 सेंमी. आकार का गड्ढा बनाते हैं।

गड्ढे के उपरी मिट्टी के साथ 10 किलोग्राम सड़ा हुआ गोबर का खाद मिलाकर गड्ढे को भर देते हैं. इससे खेत पौध के रोपनी के लिए तैयार हो जाता है।

सहजन में बीज और शाखा के टुकड़ों दोनों प्रकार से ही प्रबर्द्धन होता है, अच्छी फलन और साल में दो बार फलन के लिए बीज से प्रबर्द्धन करना जरुरी होता है।

जून से सितंबर में लगाएं पौधा

एक हेक्टेयर में खेती करने के लिए 500 से 700 ग्राम बीज पर्याप्त होता है, बीज को सीधे तैयार गड्ढों में या फिर पॉलीथीन बैग में तैयार कर गड्ढों में लगाया जा सकता है।

पॉलीथीन बैग में पौध एक महीना में लगाने योग्य तैयार हो जाता है, एक महीने के तैयार पौध को पहले से तैयार किए गये गड्ढों में जून से लेकर सितम्बर तक रोपनी किया जा सकता है।

पौधा जब लगभग 75 सेंमी का हो जाये तो पौध के ऊपरी भाग को तोड़ देना चाहिए , इससे बगल से शाखाओं को निकलने में आसानी होगी।

बिहार, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा या दक्षिण भारत में नदियों के किनारे की जमीन ज्यादातर खाली पड़ी होती हैं। यहां इनकी फसल अच्छी होती है.. शोध के मुताबिक मात्र 15 किलोग्राम गोबर की खाद प्रति गड्ढा तथा एजोसपिरिलम और पी.एस.बी. (5 किलोग्राम/हेक्टेयर) के प्रयोग से जैविक सहजन की खेती, उपज में बिना किसी ह्रास के किया जा सकता है।

अकरकरा की खेती किसानों को कर रही मालामाल, लागत कम मुनाफा ज्यादा

किसान अब अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए पारंपरिक फसलों पर निर्भर नहीं हो रहे हैं, सरकार की तरफ से मिल रही सहायता का लाभ लेकर वे नए-नए प्रयोग कर रहे हैं और उन्हें सफलता भी मिल रही है।

लखनऊ (करण वाणी, न्यूज)। केंद्र सरकार किसानों की आय बढ़ाने के लिए लगातार प्रयासरत है, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 2022 तक किसानों की आय दोगुना करने के लक्ष्य के साथ सरकार काम कर रही है, इसी वजह से किसानों को पारंपरिक फसलों से हटकर कुछ अलग करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, इन प्रयासों का नतीजा है कि भारत में औषधीय पौधों की खेती तेजी से बढ़ रही है।

किसान अब अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए पारंपरिक फसलों पर निर्भर नहीं हो रहे हैं. सरकार की तरफ से मिल रही सहायता का लाभ लेकर वे नए-नए प्रयोग कर रहे हैं और उन्हें सफलता भी मिल रही है. इसी कड़ी में अब उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, हरियाणा और महाराष्ट्र के किसान औषधीय गुणों से भरपूर अकरकरा की खेती कर रहे हैं, इसकी खेती में लागत काफी कम है और मुनाफा कई गुना ज्यादा।

4-5 लाख रुपए तक होती है कमाई

अकरकरा की खेती कर रहे किसान बताते हैं कि एक एकड़ दो क्विंटल तक बीज और 10 क्विंटल तक जड़े प्राप्त होती हैं, इनकी बाजार में कीमत 400 रुपए

किलो तक है, किसानों के मुताबिक, अकरकरा की एक एकड़ में खेती करने का खर्च 40 हजार रुपए आता है जबकि पैदावार बेचकर आप आराम से 4-5 लाख रुपए कमा सकते हैं, दवा बनाने वाली कुछ कंपनियां किसानों से अकरकरा की कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग भी कराती हैं।

अकरकरा की खेती के लिए जल निकास वाली जमीन सबसे उपयुक्त

कृषि विशेषज्ञ बताते हैं कि अकरकरा की खेती के लिए जल निकास वाली जमीन सबसे अच्छी होती है. अगर खेत की मिट्टी भुरभुरी और नरम है तो पैदावार ज्यादा होगी. इसकी बुवाई के लिए अक्टूबर-नवंबर का महीना सबसे उपयुक्त माना जाता है. इसे किसान भाई सीधे बीज के जरिए भी लगा सकते हैं. हालांकि पौध लगाकर रोपाई करने पर ज्यादा उत्पादन होता है।

खेती में 6 महीने से अधिक का समय लगता है

इस औषधीय पौधे की खेती में कुल 6-8 महीने का वक्त लगता है. किसान बताते हैं कि रोपाई के 5-6 महीने बाद अकरकरा के पौधे खुदाई लायक हो जाते हैं. खुदाई के बाद इन्हें जड़ से अलग किया जाता है. फिर उन्हें सूखाया जाता है. इसके बाद जड़े बेचने के लिए तैयार हो जाती हैं. मध्य प्रदेश के नीमच मंडी में किसान बड़े पैमाने पर अकरकरा को बेचने के लिए आते हैं।

कई रोग के इलाज में मददगार

आयुर्वेद की जानकारी रखने वाले बताते हैं कि अकरकरा के सेवन से सर्दी-जुकाम से राहत मिलती है, इसके अलावा, बदलते मौसम में भी इसके सेवन की सलाह दी जाती है, लकवा के मरीज भी शहद के साथ इसे लेते हैं, बता दें कि अकरकरा का उपयोग आयुर्वेद में 400 से अधिक वर्षों से हो रहा है, दंतमंजन बनाने लेकर दर्द और थकान दूर करने वाली दवाओं में भी इसका इस्तेमाल किया जाता है।

आलू के विकल्प के तौर पर अपना रहे हैं किसान

इन्हीं सब वजहों से इसकी मांग हमेशा बनी रहती है, लेकिन उत्पादन कम होने से आपूर्ति में दिक्कत होती है. हालांकि अब बड़ी संख्या में किसान इसकी खेती करने लगे हैं. उत्तर प्रदेश के कुछ इलाकों में किसान आलू के विकल्प के तौर पर अकरकरा लगा रहे हैं और उन्हें इससे काफी लाभ हो रहा है. अकरकरा भी आलू की तरह ही कंदवर्गीय पौधा है।

अश्वगंधा की खेती कर किसान कर सकते हैं मोटी कमाई

औषधीय गुणों से भरपूर अश्वगंधा की खेती कर किसान आज के समय में मोटी कमाई कर रहे हैं, लागत से कई गुना अधिक कमाई होने के चलते ही इसे कैश कॉर्प भी कहा जाता है।

लखनऊ (करण वाणी, न्यूज)। किसानों की आय बढ़ाने के लिए केंद्र सरकार लगातार प्रयास कर रही है, इसी को ध्यान में रखकर किसानों के लिए कई योजनाएं शुरू की गई हैं, साथ ही उन फसलों की खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे किसान अपनी कमाई को बढ़ाकर सुखमय जीवन जी सकें, औषधीय गुणों से भरपूर अश्वगंधा की खेती कर किसान आज के समय में मोटी कमाई कर रहे हैं, लागत से कई गुना अधिक कमाई होने के चलते ही इसे कैश कॉर्प भी कहा जाता ह।

अश्वगंधा एक अद्वितीय गंध और ताकत बढ़ाने की क्षमता रखने वाला पौधा है. इसका वानस्पतिक नाम विथानिया सोम्निफेरा है, अश्वगंधा महिलाओं के लिए काफी लाभकारी होता है, साथ ही इससे कई औषधी और दवाइयां बनाई जाती हैं, यहीं कारण है कि इसकी मांग हमेशा बनी रहती है, अश्वगंधा के फल के बीज, पत्ते, छाल, डंठल और जड़ों की बिक्री होती है और अच्छी कीमत मिलती है, अश्वगंधा की खेती को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार योजनाएं भी चला रही है,

तनाव और चिंता दूर करने में होता मददगार

यह एक झाड़ीदार पौधा है. अश्वगंधा को बहुवर्षीय पौधा भी कहते हैं, इसके फल, बीज और छाल का उपोयग विभिन्न दवाइयों को बनाने में किया जाता है, अश्वगंधा की जड़ से अश्व जैसी गंध आती है, इसी लिए इसे अश्वगंधा कहा जाता है, सभी जड़ी-बूटियों में सबसे अधिक प्रसिद्ध है, तनाव और चिंता को दूर करने में अश्वगंधा को सबसे फायदेमंद माना जाता है, बाजार में आसानी से चूर्ण वगैरह मिल जाते हैं।

खेती के लिए किन बातों का रखना होता है ध्यान?

अश्वगंधा की खेती के लिए बलुई दोमट और लाल मिट्टी काफी उपयुक्त होती है, जिसका पीएच मान 7.5 से 8 के बीच रहे तो पैदावार अच्छी होगी, गर्म प्रदेशों में इसकी बुआई होती है, अश्वगंधा की खेती के लिए 25 से 30 डिग्री तापमान और 500-750 मिली मीटर वर्षा जरूरी होती है, पौधे की बढ़वार के लिए खेत में नमी होनी चाहिए. शरद ऋतु में एक से दो वर्षा में जड़ों का अच्छा विकास होता है, पर्वतीय क्षेत्र की कम उपजाऊ भूमि में भी इसकी खेती को सफलतापूर्वक किया जाता है।

कब और कैसे करें अश्वगंधा की खेती?

अश्वगंधा की बुआई के लिए सबसे उपयुक्त समय अगस्त का महीना होता है, इसकी खेती करने के लिए एक से दो बारिश अच्छी बारिश के बाद खेत की दो जुताई के बाद पाटा चलाकर समतल कर दिया जाता है, जुताई के समय ही खेत में जैविक खाद डाल देते हैं. बुआई के लिए 10 से 12 किलो बीज प्रति हेक्टेयर की दर से पर्याप्त होता है. सामान्यतः बीज का अंकुरण 7 से 8 दिन में हो जाता है, 8-12 महीने पुराने बीज का जमाव 70-80 प्रतिशत तक होता है।

दो तरीके से होती है बुआई

अश्वगंधा की फसल की बुआई दो प्रकार से की जाती है, पहली विधि है कतार विधि. इसमें पैधे से पौधे की दूरी 5 सेंटीमीटर और लाइन से लाइन की दूरी 20 सेंटीमीटर रखी जाती है, दूसरा है छिड़काव विधि- इस विधि से ज्यादा अच्छे तरह से बुआई होती है, हल्की जुताई कर के रेत में मिलाकर खेत में छिड़का जाता है, एक वर्ग मीटर में तीस से चालीस पौधे होते हैं।

जनवरी से मार्च तक चलती है कटाई

बुआई के बाद अश्वगंधा की कटाई जनवरी से लेकर मार्च तक चलती है, इसे उखाड़ा जाता है और पौधों को जड़ से अलग कर दिया जाता है, जड़ के छोटे-छोटे टूकड़े कर सूखाया जाता है, फल से बीज और सूखी पत्ती को अलग कर लिया जाता है, इसके भी तमाम उपयोग होते हैं, आम तौर पर अश्वगंधा की 600 से 800 किलोग्राम जड़ और 50 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर प्राप्त होते है, आप अश्वगंधा को मंडी में लेकर जाकर या दवा और औषधी बनाने

बसपा ने गुड्डू जमाली को घोषित किया आजमगढ़ लोकसभा उपचुनाव का प्रत्याशी

▶▶मायावती के इस कदम से दिलचस्प होगा आजमगढ़ का उपचुनाव, एक तीर से ओवैसी-अखिलेश पर साधा निशाना
▶▶यूपी विधानसभा चुनाव में एआईएमआईएम उम्मीदवार शाह आलम (गुड्डू जमाली) ने असदुद्दीन ओवैसी का साथ छोड़ दिया है। उन्होंने एक बार फिर से बसपा का दामन थाम लिया है।

लखनऊ (करण वाणी, न्यूज)। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) छोड़कर एआईएमआईएम के टिकट पर विधानसभा चुनाव लड़े पूर्व विधायक शाह आलम उर्फ गुड्डू जमाली ने एक बार फिर से बसपा का दामन थाम लिया है। पार्टी अध्यक्ष मायावती ने उन्हें आजमगढ़ लोकसभा सीट से उपचुनाव के लिए प्रत्याशी भी घोषित कर दिया है। अब उपचुनाव में वह आजमगढ़ सीट से बसपा का झंडा बुलंद करेंगे।

करहल से विधायक बनने के बाद अखिलेश यादव ने हाल में आजमगढ़ की सांसदी छोड़ी है। ऐसे में अब यहां लोकसभा उपचुनाव होना है। तारीख की घोषणा तो अभी नहीं हुई है लेकिन बसपा प्रमुख मायावती ने बड़ा दांव खेल दिया है। ऐसे में अब आजमगढ़ लोकसभा उपचुनाव दिलचस्प होने के आसार है। कारण ये कि विधानसभा चुनाव में जिले की सभी सीटों पर समाजवादी पार्टी गठबंधन की जीत हुई थी।

समाजवादी पार्टी में जाने के लग रहे थे कयास

मुबारकपुर विधानसभा सीट से 2012 और 2017 में बसपा के टिकट पर विधायक बने शाह आलम उर्फ गुड्डू जमाली ने 2022 के विधानसभा चुनाव से पहले बसपा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था। उनके समाजवादी पार्टी में जाने के कयास लगाए जा रहे थे। लेकिन जब सपा ने विधानसभा चुनाव में टिकट नहीं दिया तो उन्होंने एआईएमआईएम के टिकट पर चुनाव लड़ा। हालांकि इस चुनाव में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। लेकिन अब उन्होंने फिर से बसपा की सदस्यता ग्रहण कर ली है।

मुलायम सिंह यादव के खिलाफ लड़ चुके हैं चुनाव

पार्टी की ओर से उन्होंने अखिलेश यादव के आजमगढ़ लोकसभा सीट छोड़ने के बाद होने वाले उपचुनाव के लिए अपना प्रत्याशी भी घोषित कर दिया है। उनके पुनः बसपा में शामिल होने और आजमगढ़ लोकसभा से उपचुनाव का प्रत्याशी घोषित होने पर उनके समर्थकों में हर्ष व्याप्त है।

गुड्डू जमाली इसके पूर्व भी मुलायम सिंह यादव के खिलाफ आजमगढ़ लोकसभा सीट से लोकसभा का चुनाव लड़ चुके हैं। पूर्व विधायक शाह आलम उर्फ गुड्डू जमाली ने बताया कि उन्होंने फिर से घर वापसी कर ली है। पार्टी ने उन्हें आजमगढ़ सीट के लिए होने वाले उपचुनाव के लिए अपना प्रत्याशी भी घोषित कर दिया है।

यूपी विधानसभा चुनाव में ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम के सभी उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई थी। आजमगढ़ जिले के मुबारकपुर सीट से शाह आलम गुड्डू जमाली ही एक मात्र ऐसे उम्मीदवार थे जो अपनी जमानत बचा पाए थे। गुड्डू जमाली चुनाव में 36419 वोट पाकर चौथे नंबर पर रहे थे।

शाह आलम उर्फ गुड्डू जमाली मूल रूप से आजमगढ़ के जमालपुर गांव के रहने वाले हैं। इनके पिता अधिवक्ता हैं। शाह आलम ने प्रारंभिक शिक्षा आजमगढ़ से ग्रहण की उसके बाद जामिया मिलिया विश्वविद्यालय से बीकॉम की शिक्षा ग्रहण के बाद एमबीए किया। पूर्वांचल कंस्ट्रक्शन कंपनी में यह बतौर एमडी कार्यरत हैं। पूर्वांचल कंस्ट्रक्शन कंपनी मुख्य रूप से रियल एस्टेट कारोबार से जुड़ी हुई है। शाह के पास कुल 195 करोड़ रुपये की संपत्ति है। इसमें 187 करोड़ रुपये की चल संपत्ति है, जबकि 8.39 करोड़ रुपये की अचल संपत्ति है।

सभी लोग मिलकर करें तालमेल से कामः मोहन भागवत

वाराणसी में संघ प्रमुख ने कहा कि हम देश के हर जिले में एक गांव को आदर्श गांव बनाना चाहते हैं। अभी देश में 400 गांव प्रभात गांव हैं, जहां कुछ परिवर्तन दिखता है।

लखनऊ (करण वाणी, न्यूज)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक मोहन भागवत ने वाराणसी में शनिवार को लंका स्थित विश्व संवाद केंद्र में जागरण श्रेणी और पूर्व प्रांत संगठन श्रेणी की बैठक में संगठनात्मक कामों और गतिविधियों की समीक्षा की। सरसंघचालक ने कहा कि स्वयंसेवक समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं।

स्वयंसेवकों की पहल से समाज की सज्जन शक्ति के सहयोग से समाज परिवर्तन के कार्य को परिणामकारी ढंग से आगे बढ़ाया है। हम रेस में आगे नहीं रहना चाहते, सभी लोग मिलकर तालमेल के साथ कार्य करें। इसलिए केवल संगठन की रचना नहीं कर रहे, बल्कि समाज परिवर्तन के कार्य को समाज का आंदोलन बनाना चाहते हैं।

संघ प्रमुख ने कहा कि हम देश के हर जिले में एक गांव को आदर्श गांव बनाना चाहते हैं। अभी देश में 400 गांव प्रभात गांव हैं, जहां कुछ परिवर्तन दिखता है। ऐसे ही परिवार प्रबोधन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, गौ सेवा-संवर्धन के क्षेत्र में स्वयंसेवक कार्य कर रहे हैं। भारत स्वाधीनता का अमृत महोत्सव मना रहा है।

स्वतंत्रता आंदोलन सार्वदेशिक

और सर्वसमावेशी था, लेकिन कई तथ्य सामने नहीं आए, दब गए। स्वतंत्रता सेनानियों ने संगठित, संपन्न भारत का स्वप्न देखा था, उसे साकार रूप देने का कार्य वर्तमान पीढ़ी को करना चाहिए, इस दृष्टि से विभिन्न कार्यक्रम हमने लिए हैं।

संघ प्रमुख ने शाखा में शामिल होने वाले लोगों के प्रशिक्षण पर जोर देते हुए शताब्दी वर्ष 2025 से पहले संघ के प्रमुख सात आयामों को परिपूर्ण करने का लक्ष्य रखा और आगामी तीन वर्ष में धर्मजागरण, परिवार प्रबोधन, सामाजिक समरसता, सामाजिक सद्भाव, गो संवर्धन, ग्राम विकास, जल व पर्यावरण संरक्षण की गतिविधियों की कार्ययोजना भी बताई।

जागरण श्रेणी और पूर्व प्रांत संगठन श्रेणी के स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए सरसंघचालक ने कहा कि दो क्षेत्रों में विशेष कार्य करने की बड़ी आवश्यकता है। शिक्षा क्षेत्र में विद्यालय बंद रहने के कारण छात्रों का विकास प्रभावित हुआ है, इसे लेकर संघ के स्वयंसेवक कार्य कर रहे हैं।

ऑनलाइन माध्यम से पढ़ाई तो हुई, लेकिन काफी कुछ छूट गया, इसकी भरपाई आवश्यक है। दूसरा कोरोना के कारण रोजगार प्रभावित हुआ है, स्वावलंबन को लेकर भी स्वयंसेवक कार्य कर रहे हैं। इसी के संबंध में बैठक में एक प्रस्ताव पारित किया गया।

प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता, मानवशक्ति की विपुलता और अंतर्निहित उद्यमकौशल के चलते भारत में अपने कृषि, विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों को परिवर्तित करते हुए कार्य के पर्याप्त अवसर उत्पन्न कर आत्मनिर्भर बनने की क्षमता है। इस क्षमता का सदुपयोग करने के लिए एक तरफ सरकार की योजना होनी चाहिए, साथ ही समाज की कर्मण्यता भी बढ़नी चाहिए। गुजरात के स्वयंसेवकों ने, समाज बंधुओं ने दशकों से संघ कार्य में सहयोग व सहभाग कर कार्य को सुदृढ़ किया है, उनके प्रति हम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। संघ कार्य को अपना ही कार्य समझकर सहयोग दिया है। बीएचयू में रविवार को कुटुंब स्नेह मिलन का आयोजन किया गया है। संघ के आयाम कुटुंब प्रबोधिनी को बढ़ावा देने के लिए आयोजन की रूपरेखा तैयार की गई है। इस आयोजन में स्वयंसेवक अपने-अपने परिवार के साथ हिस्सा लेंगे। संघ की यह सोच है कि अगर परिवार जुड़ेगा तो सेवा का भाव और बेहतर हो जाएगा। इस दौरान सरसंघचालक परिवार को शाखा से जोड़ने के बारे में मूलमंत्र देंगे।

सभी विभागों में खाली पदों पर होगी भर्ती, मुख्यमंत्री का फैसला

लखनऊ (करण वाणी, न्यूज)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को बड़ा फैसला करते हुए कहा कि सरकारी महकमों में खाली पदों पर भर्ती की प्रक्रिया को तेजी से पूरा किया जाए। इसके लिए मुख्यमंत्री ने आला अफसरों को खास निर्देश दिए। भर्ती के लिए विभागों में नए सिरे से खाली पदों का सर्वे होगा, संभावना है कि पदों की संख्या एक लाख से ऊपर हो सकती है।

अधिकारी चलाएं भर्ती अभियान

मुख्यमंत्री शनिवार को योजना भवन में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों को अपनी सरकार के एजेंडे के बारे में निर्देश दे रहे थे। उन्होंने कहा कि सभी विभागाध्यक्ष रोजगार के मुद्दे को प्राथमिकता से लेते हुए कार्रवाई करें। विभागों में भर्ती अभियान चलाया जाए और अधिकारी अपने विभागों में भर्ती की प्रक्रिया को गति दें। विभागों में कितने पद खाली हैं। इसकी सूची तैयार की जाए और भर्ती प्रक्रिया समयबद्ध ढंग से आगे बढ़ाई जाए। भर्ती में पारदर्शिता और ईमानदारी को हर हाल में प्राथमिकता पर रखा जाए।

इसके अलावा उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि हर विभाग में पहले सौ दिन, छह माह व एक साल का लक्ष्य तय किया जाए। अधिकारी समय से कार्यालय आएं। फाइलों को कतई न लटकाएं। ई-आफिस को पूरी तरह लागू किया जाए। सीएम ने कहा कि पहले

हमारी चुनौती कुव्यवस्था से थी, हमने सुशासन की स्थापना की। अब सुशासन को और मजबूती देने के लिए हमारी प्रतिस्पर्धा खुद से है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विजन के अनुरूप ह्यनये भारत का नया उत्तर प्रदेशह्ण आकार ले रहा है। इस कार्य को और तेज किया जाए। जनता शासन पर पैनी नजर रखती है और अन्त में उसी के अनुरूप फैसला करती है। जनता-जनार्दन के लिए जो सरकार अच्छा कार्य करती है, उसे दोबारा मौका भी मिलता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि भ्रष्टाचार पर जीरो टॉलरेंस नीति को प्रभावी ढंग से जारी रखा जाए। लोक कल्याण संकल्प पत्र-2022 को पूरा करने के लिए पांच साल की योजना बनाई जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश की अर्थव्यवस्था को एक ट्रिलियन यूएस डॉलर बनाने के लिए 10 प्राथमिक सेक्टरों को चिन्हित किया जाए। इसकी नियमित समीक्षा की जाए। मुख्य सचिव द्वारा साप्ताहिक समीक्षा तथा स्वयं मुख्यमंत्री द्वारा इस संबंध में पाक्षिक समीक्षा की जाएगी। केंद्र से प्राप्त होने वाले पत्रों का उत्तर एक सप्ताह में अनिवार्य रूप से भेज जाए।

नोडल अधिकारी अपने जिले के प्रभारी मंत्री के साथ प्रत्येक माह जिले का भ्रमण कर योजनाओं का क्रियान्वयन मौके पर परखें। अपनी रिपोर्ट मुख्यमंत्री कार्यालय को दें। संकल्प पत्र को ध्यान में रखते हुए प्रदेश सरकार का वर्ष 2022-23 का बजट तैयार किया जाए। मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र ने मुख्यमंत्री को भरोसा दिलाया कि सभी अधिकारी उनके निदेर्शों का पालन करते हुए पूरी निष्ठा व लगन के साथ कार्य करेंगे।

सैनिकों की बदौलत देश की सीमाएं सुरक्षितः कौशल किशोर

वर्तमान एवं भूतपूर्व सैनिक मिलन समारोह कार्यक्रम का आयोजन

बंथरा (करण वाणी, न्यूज)। आज हमारे वीर सैनिकों की बदौलत देश की सीमाएं पूरी तरह से सुरक्षित हैं और हम सभी त्योहारों को बिना किसी भय के निडर होकर हर्ष और उल्लास के साथ मनाते हैं। सैनिक अपने देश की रक्षा के लिए अपने त्यौहार भी घरों में ना मना कर सीमाओं की सुरक्षा में डटे रहते हैं। इनकी जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम है।उक्त विचार रविवार को ग्रामसभा बनी में भूतपूर्व सूबेदार भगवान बक्श सिंह चौहान द्वारा आयोजित वर्तमान एवं भूतपूर्व सैनिक मिलन समारोह कार्यक्रम में केंद्रीय राज्य मंत्री एवं मोहनलालगंज के भारतीय जनता पार्टी के सांसद कौशल किशोर ने व्यक्त किए।केंद्रीय मंत्री कौशल किशोर ने कहा कि देश की सीमाएं पूरी तरीके से सुरक्षित है हमारी सेनाएं दुश्मन देशों को मुंह तोड़ जवाब दे रही हैं।किसी दुश्मन देश की हिमाकत नहीं है कि भारत को टेढ़ी नजर से देख सकें।इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री कौशल किशोर ने भूतपूर्व सैनिकों के साथ फूलों की होली खेली और उन्हें अंग वस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर भाजपा के जिला अध्यक्ष श्री कृष्ण लोधी ने सैनिकों की प्रशंसा करते हुए कहा कि आज हमारे सैनिक आतंकवाद पर पूरी तरीके से नकल कस चुके हैं , और जो भी देश की शांति में खलल डालने का प्रयास करता है उसको उसके घर के अंदर घुस कर मारते हैं। कार्यक्रम में भूतपूर्व नायब सूबेदार मनोज कुमार सिंह , कर्नल एस एन राय , आर डी सिंह , मनोज कुमार कश्यप, राम प्रकाश चौरसिया, सुरेश कुमार सिंह तमाम वर्तमान में भूतपूर्व सैनिक भारी संख्या में उपस्थित रहे।

राज्यपाल ने नवगठित उ0प्र0 विधानसभा के प्रोटेम स्पीकर सहित 4 अन्य को शपथ दिलाई

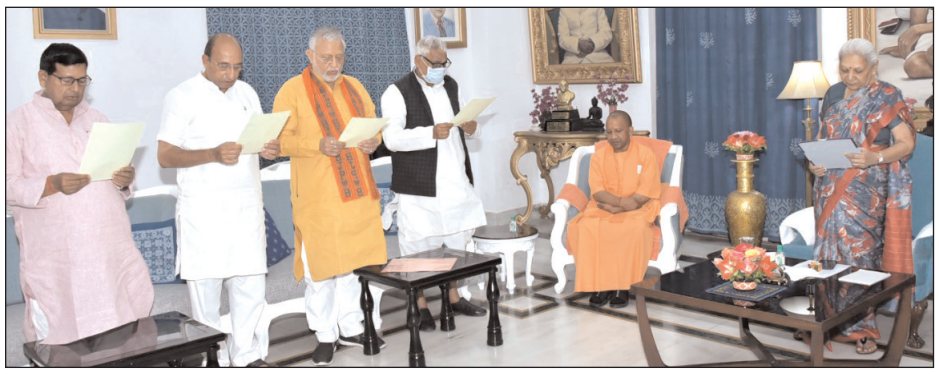

लखनऊ (करण वाणी, न्यूज)। उत्तर प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने आज राजभवन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में वरिष्ठ विधान सभा सदस्य श्री रमापति शास्त्री को नवगठित विधान सभा के प्रोटेम स्पीकर के लिए पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। इसके साथ ही नई विधान सभा के नव निर्वाचित सदस्यों को सदन में शपथ दिलाने हेतु नामित विधान सभा सदस्य (1) श्री सुरेश कुमार खन्ना, (2) श्री जय प्रताप सिंह, (3) श्री राम पाल वर्मा एवं (4) श्री माता प्रसाद पाण्डेय को भी शपथ ग्रहण करायी। कार्यक्रम में अपर मुख्य सचिव राज्यपाल महेश कुमार गुप्ता, अपर मुख्य सचिव गृह अवनीश अवस्थी, अपर मुख्य सचिव सूचना नवनीत सहगल, प्रमुख सचिव विधान सभा प्रदीप कुमार दुबे, प्रमुख सचिव मुख्यमंत्री एवं सूचना संजय प्रसाद तथा अन्य सहयोगी अधिकारी उपस्थित रहे।

चमढ़ी चिंतन बैठक के दौरान सीएम शिवराज सिंह चौहान ने की कई बड़ी घोषणाएं

पचमढ़ी। मध्य प्रदेश मंत्रिपरिषद की पचमढ़ी में चल रही दो दिवसीय चिंतन बैठक के दौरान सीएम शिवराज सिंह चौहान ने कई बड़ी घोषणाएं की। सीएम शिवराज ने मीडियो से बात करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना मध्य प्रदेश ने प्रारंभ की थी, अब यह योजना फिर से प्रारंभ की जा रही है। 18 अप्रैल को पहली ट्रेन काशी विश्वनाथ के लिए जाएगी, वहां संत रविदास, संत कबीरदास के दर्शन करेंगे, गंगाजी का स्नान होगा। पहली ट्रेन में हम लोग भी जाएंगे। हम वायुयान से भी संभव हुआ तो बुजुर्गों को ले जाएंगे।

सीएम ने कहा कि हमने कन्या विवाह योजना की समीक्षा की, योजना फिर से प्रारंभ की जा रही है। 21 अप्रैल से कन्या विवाह फिर से नए स्वरूप में फिर से प्रारंभ की जाएंगे। आयोजन की राशि 51 हजार राशि थी उसे 55 हजार किया जा रहा है। योजना अंतर्गत बेटियों को गृहस्थी का सामान भेंट स्वरूप दिया जाएगा। लाड़ली लक्ष्मी योजना-2 का शुभारंभ 2 मई को कर रहे हैं। 2 मई से 11 मई तक लाड़ली लक्ष्मी उत्सव पूरे प्रदेश में आयोजित किया जाएगा। लाड़ली लक्ष्मी बेटियों को स्वावलंबन, आर्थिक सशक्तिकरण के लिए कदम भी उठाए जाएंगे। हर गांव में लाड़ली लक्ष्मी क्लब गठित किए जाएंगे। सीएम शिवराज ने कहा कि राशन की दुकानों को बहुउद्देशीय बनाया जाएगा। 7 अप्रैल को फिर से अन्न उत्सव मनाया जाएगा, हर एक राशन की दुकान पर यह कार्यक्रम होगा।चमढ़ी चिंतन बैठक के दौरान सीएम शिवराज सिंह चौहान ने की कई बड़ी घोषणाए।

2024 में मोदी के लिए नहीं कोई चुनौती

एक समय जो कांग्रेस अखिल भारतीय स्तर पर वर्चस्व बनाए थी, वह पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव के बाद अब केवल दो राज्यों राजस्थान और छत्तीसगढ़ में सिमट गई है। राजनीतिक अस्थिरता व गलत निर्णयों के चलते पंजाब जैसा महत्वपूर्ण राज्य उसके हाथ से खिसक गया। कांग्रेस की भविष्य की संभावनाओं पर पूरी तरह पानी फिर गया है। उसके तीनों मोहरों सोनिया गांधी, राहुल और प्रियंका को जनता ने पूरी तरह नकार दिया है। यही हश्र बसपा और मायावती का हुआ है।

एक समय समझा जाता था कि बसपा देशभर में कांग्रेस का विकल्प बन सकती है। इसी पंजाब से निकलकर बसपा उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य में तीन बार सत्तारूढ़ होने के बाद इस बार केवल एक सीट जीत पाई है। कांग्रेस का विकल्प बनती आम आदमी पार्टी दिख जरूर रही है, लेकिन अन्य क्षेत्रीय दलों से अरविंद केजरीवाल कितना तालमेल बिठा पाते हैं, यह कहना फिलहाल मुश्किल है। वैसे भी हरेक क्षेत्रीय दल का प्रमुख प्रधानमंत्री बनने की दौड़ में हैं। इसी वजह से 2024 के लोकसभा चुनाव में किसी भी दल का कोई भी नेता नरेन्द्र मोदी के पासंग भी खड़ा नहीं दिखता।

पारिवारिक कलह और वंशवादी राजनीति के कारण हाशिए पर पहुंचे मुलायम सिंह और लालू यादव तथा उनके दल सपा व राजद ऐसे ही हालात की गिरफ्त में हैं। अखिलेश यादव ने अपने यादव और मुस्लिम वोट बैंक के चलते करीब सवा सौ सीटें जरूर जीत ली हैं, लेकिन लोकसभा चुनाव में वे कोई करिश्मा कर दिखाएंगे, इसकी संभावना लगभग नगण्य है। उधर, तेजप्रताप और तेजस्वी यादव भी आपस में लड़कर लालू की विरासत को पलीता लगा रहे हैं। जहां तक दक्षिण भारत की बात है तो, तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा के जमाने में बने समीकरण देखने में लगे हैं। उन्हें यह भ्रम हो गया है कि वे तेलंगाना से आए पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिंहराव की जगह लेने के काबिल हो गए हैं। महाराष्ट्र के कद्दावर नेता शरद पवार तो पिछले 25-30 साल से लाल किले पर झंडा फहराने का सपना देख रहे हैं। हालांकि अब उनकी संभावना भी धूमिल हो चुकी है। क्षेत्रीय दल के रूप में झारखंड तक सिमटे झारखंड मुक्ति मोर्चा से भाजपा को कोई चुनौती मिलने से रही। इसके प्रमुख और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन आदिवासियों के लिए जनगणना में जिस तरह से अलग धर्म कोड की मांग को हवा दे रहे हैं, उसके चलते हिंदू धर्म से जुड़े अन्य जाति-जनजाति समुदायों में भी बेचैनी है। देशभर के आदिवासी-वनवासी भगवान शिव को अपना आदिदेव मानते हैं और सच्चाई भी यही है। आदिवासियों का स्वाभाविक झुकाव हिंदुत्व और उनकी परंपरा को पोसने वाली भाजपा की ओर हो चला है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री स्टालिन और उनके भाई में विवाद जगजाहिर है। ममता बनर्जी भाजपा के लिए सीधी चुनौती जरूर हैं, लेकिन बंगाल के बाहर उनका कोई वजूद नहीं। 2024 में राष्ट्रीय फलक पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लिए कोई चुनौती दूर दूर तक दिखाई नहीं देती। यह स्थिति मोदी को थाल में सजी हुई नहीं मिली। उन्होंने परिश्रम के साथ ईमानदारी, दृढ़ता, देशभक्ति और जन-जन के मन को जीत लेने वाली राजनीति करते हुए अपने लिए इस स्थिति को रचा है। हाल ही में संपन्न पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में से चार में जीत हासिल करना और उत्तर प्रदेश में प्रचंड ताकत के साथ लौटना 2024 के लोकसभा चुनाव की पूर्व पीठिका है।

शपथ लेते ही योगी ने ली कैबिनेट की बैठक, तय कर दी सरकार की दिशा

लखनऊ (करण वाणी, न्यूज)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दोबारा अपनी सरकार संभालते ही कामकाज भी शुरू कर दिया है। शपथ लेने के कुछ देर बाद ही उन्होंने नवनियुक्त मंत्रियों की बैठक ली। उनसे साफ कहा कि हर मंत्री को काम करने का टारगेट दिया जाएगा। मंत्रियों की हर महीने परफार्मेंस परखी जाएगी। छह महीने बाद उनका रिपोर्ट कार्ड देखा जाएगा।

मुख्यमंत्री ने अपने मंत्रियों को उनकी बड़ी जिम्मेदारी का अहसास कराते हुए कहा कि आपको संगठन से तालमेल बनाते हुए काम करना है। भ्रष्टाचार व अपराध के मामले में सरकार की शुरू से जीरो टालरेंस नीति रही है। इसलिए पादर्शिता व भ्रष्टाचार मुक्त शासन हमें देना है और जनता के लिए पूरी तरह लग कर काम करना है।

राज्य की कमान संभालने के बाद उन्होंने लोकभवन में अपने मंत्रियों के साथ बैठक की और एक दूसरे का परिचय कराया। इसके साथ ही अपनी सरकार की प्राथमिकताओं से भी अवगत कराया। मुख्यमंत्री ने उनसे कहा कि आप सबके सहयोग से हमें यूपी को नंबर एक बनाना है। राज्य के करोड़ों लोगों की उम्मीदों को अपने पहले शासन में पूरा किया है और आगे भी इसी दिशा में काम करना है और हर क्षेत्र में तरक्की करना है।

सीएम ने कहा कि आप लोगों को बड़ी जिम्मेदारी मिली है। हर मंत्री की विभागीय बैठक में परफार्मेंस देखी जाएगी। केंद्र व राज्य सरकार की

योजनाओं की रफ्तार को और तेज करते हुए प्रभावी तरीके से जमीन पर उतारना है। इसके आम जनमानस में सरकार व आप लोगों की लोकप्रियता बढ़ेगी।

योगी आदित्यनाथ ने करीब डेढ़ घंटे तक मंत्रियों के साथ अनौपचारिक बात की। चूंकि अभी विभागों का वितरण नहीं हुआ, इसलिए मुख्यमंत्री ने विभागों के बारे में चर्चा न कर समग्रता में भाजपा के संकल्प पत्र के हिसाब से तेजी व प्रभावी तरीके से काम करने पर जोर दिया।

मुख्यमंत्री ने पहले मंत्रियों से उनके बारे में जानकारी ली। उनसे शिक्षा, अनुभव, क्षेत्र की समस्याओं आदि के बारे में जानकारी ली। सीएम ने दोनों उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य व बृजेश पाठक का भी परिचय कराया। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भी आभार व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री ने शनिवार को बुलाई पहली कैबिनेट बैठक

सीएम ने शनिवार को अपनी पहली कैबिनेट बैठक बुलाई है। सुबह दस बजे यह बैठक लोकभवन में होगी।इसके बाद वह राजभवन में प्रोटेम स्पीकर के शपथ ग्रहण में भी शामिल होंगे। इसके बाद 11.30 पर अतिरिक्त मुख्य सचिवों, प्रमुख सचिवों और शीर्ष अधिकारियों को योजना भवन में 11.30 पर संबोधित करेंगे।

नए मंत्रिमंडल में जगह न मिलने पर बोले मोहसिन रजा- रोटेशन के आधार पर काम करती है बीजेपी

लखनऊ (करण वाणी, न्यूज)। योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को दोबारा यूपी के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली, यूपी में 35 साल बाद किसी पार्टी को लगातार दूसरी बार बहुमत मिला है. समारोह में पीएम नरेंद्र मोदी, कई केंद्रीय मंत्री और बीजेपी शासित राज्यों के सीएम शामिल हुए।

योगी सरकार के पहले कार्यकाल में मुस्लिम चेहरे रहे मोहसिन रजा को इस बार कैबिनेट में जगह नहीं मिल सकी है. बीजेपी ने मोहसिन रजा की जगह दानिश आजाद अंसारी को अल्पसंख्यक कोटे से मंत्री बनाया है. वहीं यूपी में कैबिनेट मंत्री रहे मोहसिन रजा ने मंत्रिमंडल में जगह न मिलने पर आजतक से बताया कि जो मंत्रिमंडल बनाया गया है, वह काफी सोच समझकर और बहुत ही अच्छा बनाया गया है।

मोहसिन रजा ने कहा कि उन्हें कैबिनेट में शामिल नहीं किया गया है, इसका मतलब कुछ और नहीं है. बीजेपी रोटेशन पर काम करती है. एक व्यक्ति को काम दिया फिर दूसरे को देती है. मैं संगठन के लिए काम कर रहा हूं, करता रहूंगा, कुछ और काम करूंगा। दूसरा मुस्लिम चेहरा लाया गया है कि वो ज्यादा काम करेगा और अच्छी बात यह होगी कि बड़ों का अपने काम में उपयोग करेगा अच्छी बात है. अगर कोई ऐसे लोगों को लेकर चलता है तो अच्छा रहेगा।

इनको भी नहीं मिली मंत्रिमंडल में जगह

पिछली बार मंत्री रहे मोहसिन रजा के अलावा आशुतोष टण्डन, महेंद्र सिंह, सतीश महाना, श्रीकांत शर्मा, सिद्धार्थनाथ सिंह, उपेन्द्र तिवारी, अशोक कटारिया, राम नरेश अग्निहोत्री, नीलकंठ तिवारी, राजेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ मोती सिंह, सुरेश राणा जैसे चेहरों को भी

इस बार मंत्रिमंडल में शामिल नहीं किया गया है।

मोहसिन रजा मेरे बड़े भाई: अंसारी

वहीं यूपी के सीएम योगी की सरकार में राज्यमंत्री बनाए गए दानिश आजाद अंसारी ने आज तक से कहा कि मोहसिन रजा उनके बड़े भाई हैं. हम दोनों लोग की यूपी में मुस्लिम समुदाय के लिए काम करेंगे।

लखनऊ विवि से छात्र राजनीति की शुरूआत

दानिश आजाद लंबे समय से राजनीति में सक्रिय हैं। लखनऊ विश्वविद्यालय में छात्र राजनीति से अपनी राजनीतिक पारी शुरू करने वाले दानिश आजाद अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में विभिन्न पदों पर रहे. सूबे में 2017 में भाजपा सरकार आने के बाद उन्हें भाषा समिति का सदस्य बनाया गया। आजाद लगातार अल्पसंख्यक समाज व युवाओं में अपनी सक्रियता बनाये हुए हैं। इसी नाते 2022 के विधानसभा चुनावों को देखते हुए उन्हें पार्टी ने प्रदेश महामंत्री का पद दिया है। अंसारी समुदाय से आते हैं दानिश बीजेपी अल्पसंख्यक मोर्चा के महासचिव रहते हुए दानिश आजाद ने अहम भूमिका अदा की है. बीजेपी अपने सियासी एजेंडे के तहत अब उन्हें कैबिनेट में शामिल किया है. मोदी सरकार के बनने के बाद से बीजेपी का फोकस मुस्लिम पसमांदा जाति पर है, जिसके लिए मोहसिन रजा की जगह दानिश आजाद को लाया गया है. मोहसिन रजा शिया और मुस्लिम सवर्ण जाति से आते हैं, जबकि दानिश मुस्लिम ओबीसी के अंसारी समुदाय से आते हैं,

52 मंत्रियों ने भी ली शपथ

यूपी में शुक्रवार को 52 मंत्रियों ने शपथ ली। केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक ने उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली, इसके बाद 16 नेताओं ने कैबिनेट मंत्री, 14 नेताओं ने राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और 20 नेताओं ने राज्य मंत्री पद की शपथ ली।

बसपा सुप्रीमो मायावती ने पार्टी में किया बड़ा बदलाव

▶▶ भतीजे आकाश आनंद का नाया राष्ट्रीय कोआर्डिनेटर
▶▶ प्रत्याशियों के साथ पार्टी के सभी प्रमुख पदाधिकारियों तलब

लखनऊ (करण वाणी, न्यूज)। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2022 में बहुजन समाज पार्टी की कड़ी हार के बाद पार्टी की मुखिया मायावती ने रविवार को समीक्षा बैठक में कड़ा कदम उठाया है। मायावती ने बसपा उत्तर प्रदेश की पूरी कार्यकारिणी को भंग करने के साथ ही तीन चीफ कोआर्डिनेटर को नियुक्त किया है।

बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने उत्तर प्रदेश बसपा की कार्यकारिणी भंग करने के साथ ही अपने भतीजे आकाश आनन्द को बसपा का राष्ट्रीय कोआर्डिनेटर बनाया है। बसपा सुप्रीमो मायावती ने आकाश आंनद बड़ी जिम्मेदारी दी है। मायावती ने प्रदेश अध्यक्ष तथा जिला अध्यक्ष को छोड़कर उत्तर प्रदेश बसपा की सारी कार्यकारणी को भंग किया। उन्होंने उत्तर प्रदेश के लिए तीन चीफ कोआर्डिनेटर बनाए हैं। मेरठ के मुनकाद अली, बुलंदशहर के राजकुमार गौतम तथा आजमगढ़ के विजय कुमार को प्रदेश के सभी कोआर्डिनेटर रिपोर्ट करेंगे। यह तीनों सभी कोआर्डिनेटर पर निगाह रखेंगे। इसी के साथ बसपा ने विधायक दल के नेता रहे शाह आलम उर्फ गुड्डू जमाली की घर वापसी भी करा ली है। माना जा रहा है कि गुड्डू जमाली को आजमगढ़ लोकसभा उप चुनाव में बसपा का प्रत्याशी बनाया जाएगा।

उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में 403 सीट में से सिर्फ बलिया की रसड़ा पर जीत मिलने के बाद बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती की चिंता काफी बढ़ गई थी। रविवार को उन्होंने लखनऊ में सभी प्रत्याशियों के साथ ही पार्टी के शीर्ष पदाधिकारियों के साथ लखनऊ में बैठक के दौरान बड़ा कदम उठाया। मायावती ने उत्तर प्रदेश की कार्यकारिणी को भंग कर दिया। इतना ही नहीं तीन चीफ कोआर्डिनेटर की नियुक्ति भी की गई है। अब तीन चीफ कोआर्डिनेटर अन्य कोआर्डिनेटर पर निगाह रखेंगे। मायावती ने बैठक के दौरान ही शाह आलम उर्फ गुड्डू जमाली को आजमगढ़ लोकसभा उप चुनाव के बसपा का उम्मीदवार घोषित किया

बहुजन समाज पार्टी ने विधानसभा चुनाव से पहले पार्टी को छोड़ें वाले विधायक दल के नेता शाह आलम उर्फ गुड्डू जमाली को पार्टी में दोबारा शामिल किया है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक सीमा सिंह द्वारा प्वांइट ऑफसेट, 86/98 कुर्मी टोला गुरुगोविन्द सिंह मार्ग, लालकुआं, लखनऊ-226018 से मुद्रित एंव पहाड़पुर, पोस्ट बंथरा, लखनऊ-226401 (उ.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक- पंकज सिंह मो- 9415067370 E-mail:-karnvaninews@gmail.com website:- www.karnvaninews.com RNI-UPHIN/2016/74800